| HIT | संख्या | स्रोक |
|----------------------|--------|-------|
| कुम्भीर् मक्षिकायाः | 2 | 288 |
| यान स्य | 3 | 188 |
| नीवा ज ले। त्यार्वार | स२ | 188 |
| मृहत् दकायाः | 2 | 185 |
| मुदङ्गस्य | 2 | 188 |
| अरित्रस | 2 | 188 |
| नुसाध टस्य | 2 | 185 |
| यग्चनुर्था म स्य | 1 | 188 |
| ज्व च द ङ्गारस | 1 | SAR |
| स्वभावस्य | 2 | 188 |
| वेश्यायाः | 2 | 188 |
| नी समग्रेः | 2 | 284 |
| गुजायाः | | 184 |
| भार्खायाः | | 184 |
| यहवस्य | | 984 |
| अन्यनिर्मा स्य | 9 | 186 |
| नवी न सुषायाः | • | 186 |
| वन्दिचारस | 2 | 186 |
| सन्धिद्वार कस्य | 2 | 186 |
| स्रव निद्गाजपत | | 680 |
| मु द् दि अजपन् | ll: 8 | 180 |

| नाम | | संखा | स्रोक |
|------------|--|---------|-------|
| वामनिद् | गाज स्विय | : 9 | 180 |
| अंजनि | रंगाज स्वि | यः १ | 680 |
| पुर्डरीक | दिगाजि | वः १ | 182 |
| सुप्रनीक | द्गाजि | वा १ | 182 |
| पुष्पद् ना | द्गाजपन | याः १ | 182 |
| सार्वभीम | दिगाजप | न्याः १ | 182 |
| सेवनस्य | | 3 | 1800 |
| स्कटर | स | 2 | 186 |
| विपिटर | The same of the sa | 2 | 1800 |
| वाजानं। | | 2 | 186 |
| अभ्यास | स्य | 2 | १५० |
| पत्रभङ्ग | स | 2 | १५० |
| भूतसेव | मस्य | 2 | १५० |
| धनवृदि | इजीवक | स् | १५० |
| गंगायाः | | 2 | 148 |
| कावेट्या | | 2 | 348 |
| कात्तिक | मास्स | 2 | 948 |
| इन्द्रजा | लकस्यू | 2 | 148 |
| प्रचेचिव | तायाः | 2 | १५२ |
| विस्मिन | स्य | 2 | १५२ |
| समूहर | स | 2 | १५२. |
| | | | |